भारतीय विद्यालय अल वादी अल कबीर(2023-24)

कक्षा- दसवीं	**विभाग : हिंदी**	**Date – 25-04-2024**
कार्य-पत्रिका संख्या: 3	**विषय : अर्थग्रहण**	**Note: Pl. file in portfolio**

नाम: _____अनुभाग: _____ अनुक्रमांक: _____दिनांक: _____

1 निम्नलिखित अपठित गद्यांश को ध्यान से पढ़ें और प्रश्नों के उत्तर दें:

एक बार स्वामी विवेकानंद का एक शिष्य उनके पास आया और उसने कहा, 'स्वामी जी, मैं आप की तरह भारत की संस्कृति, दर्शन और रीति-रिवाज का प्रचार प्रसार करने के लिए अमेरिका जाना चाहता हूँ । यह मेरी पहली यात्रा है।आप मुझे विदेश जाने की अनुमति और अपना आशीर्वाद दें ताकि मैं अपने मकसद में सफल होऊँ।' स्वामी जी ने उसे ऊपर से नीचे तक देखा फिर कहा, 'सोच कर बताऊँगा।' शिष्य हैरत में पड़ गया। उसने विवेकानंद जी से इस उत्तर की कल्पना भी नहीं की थी। उसने फिर कहा,स्वामी जी, मैं आप की तरह सादगी से अपने देश की संस्कृति का प्रचार करूँगा। मेरा ध्यान और किसी चीज पर नहीं जाएगा।' विवेकानंद ने फिर कहा, 'सोच कर बताऊँगा।' शिष्य ने समझ लिया कि स्वामी जी उसे विदेश नहीं भेजना चाहते इसलिए ऐसा कह रहे हैं। वह उनके पास ही रुक गया। दो दिनों के बाद स्वामी जी ने उसे बुलाया और कहा, 'तुम अमेरिका जाना चाहते हो तो जाओ। मेरा आशीर्वाद तुम्हारे साथ है।' शिष्य ने सोचा कि स्वामी जी ने इतनी छोटी सी बात के लिए दो दिन सोचने में क्यों लगाया। उसने अपनी यह दुविधा स्वामी जी को बताई। स्वामी जी ने कहा, 'मैं दो दिनों में यह समझना चाहता था कि तुम्हारे अंदर कितनी सहनशक्ति है । कहीं तुम्हारा आत्मविश्वास डगमगा तो नहीं रहा है। लेकिन तुम दो दिनों तक यहाँ रह कर निर्विकार भाव से मेरे आदेश की प्रतीक्षा करते रहे । न क्रोध किया, न जल्दबाजी की और नहीं धैर्य खोया। जिसमें इतनी सहनशक्ति और गुरु के प्रति प्रेम का भाव होगा, वह शिष्य कभी भटकेगा नहीं। मेरे अधूरे काम को वही आगे बढ़ा सकता है। किसी दूसरे देश के नागरिक के मन में अपने देश की संस्कृति को अंदर तक पहुँचाने के लिए ज्ञान के साथ-साथ, धैर्य, विवेक और संयम की आवश्यकता होती है। मैं इसी बात की परीक्षा ले रहा था। शिष्य स्वामी जी की इस अनोखी परीक्षा से अभिभूत हो गया।

(i) स्वामी जी के शिष्य का अमेरिका जाने का उद्देश्य था-

(क) अमेरिका की संस्कृति का ज्ञान प्राप्त करना

(ख) भारतीय संस्कृति और हिंदू धर्म का प्रचार करना

(ग) भारतीय धर्मों का प्रचार प्रसार करना

(घ) भारत की संस्कृति, दर्शन और रीति-रिवाज का प्रचार करना

(ii) विवेकानंद जी ने शिष्य को अमेरिका जाने की अनुमति नहीं दी क्योंकि -

(क) शिष्य को भारतीय रीति-रिवाजों का ज्ञान नहीं था

(ख) शिष्य के धैर्य,विवेक और संयम की परीक्षा लेना चाहते थे

(ग) शिष्य को ज्ञान देना चाहते थे (घ) शिष्य के पास पर्याप्त धन नहीं था

(iii) विवेकानंद जी के उत्तर न देने पर शिष्य की प्रतिक्रिया थी-

(क) क्रोध से भर गया (ख) निर्विकार भाव से प्रतीक्ष करता रहा

(ग) स्वामी जी से विनती करने लगा (घ) धैर्य खोकर विचलित हो गया

(iv) शिष्य स्वामी जी के पास क्यों गया था?

(क) अमेरिका जाने की अनुमति माँगने (ख) ज्ञान - प्राप्त करने

(ग) स्वामी की जी सेवा करने (घ) स्वामी जी का आशीर्वाद प्राप्त करने

(v) गद्यांश का उचित शीर्षक होगा -

(क) स्वाभिमान की रक्षा (ख) धैर्य - परीक्षा

(ग) अनोखी परीक्षा (घ) पहली परीक्षा

2 निम्नलिखित अपठित गद्यांश को ध्यान से पढ़ें और प्रश्नों के उत्तर दें:

'सांच बराबर तप नहीं' सूक्ति में सत्य की महत्ता को स्वीकारा गया है। सच के मार्ग पर चलना अपने आप में तप है । तप का अर्थ है 'तपना'। सच का मार्ग सैदेव कटीला होता है, कठिन होता है। तप करने की ताकत रखने वाला ही इस पर चल सकता है। तप वही कर सकता है जिसका हृदय साफ,निष्पाप व एकाग्रचित हो। 'सत्य' मानव हृदय के गौरव का प्रतीक है। सच बोलने वाले के मुख पर एक अलग तरह का तेज रहता है, सोच रहता है। ऐसा व्यक्ति निडर होता है व लोगों के दिल में जगह बनाता है। अप्रिय सत्य मनुष्य को कभी नहीं बोलना चाहिए । सत्य असत्य की परिभाषा अपने आप में कुछ नहीं, परंतु दूसरों की भलाई, कल्याण के लिए बोला गया बड़े से बड़ा झूठ भी सत्य है और वास्तविक सत्य जो दूसरों को कठिनाई में डाल दे,बोला जाए तो वह झूठ की परिधि में आता है। सत्य का पालन करने के लिए सत्यवादी हरिशचंद्र अपने पूरे जीवन को तपस्वी की तरह जीने पर मजबूर हुए । तप और सत्य मिलकर मानव जीवन को विकास की राह पर अग्रसर करते हैं । सत्य की प्राप्ति ही कठोरतम तप है यह संसार का वह सर्वोत्तम धर्म है जिसके बिना जीवन सारहीन हो जाता है । सत्य अटल है । लाख झूठ भी उसके समक्ष टिक नहीं सकते । झूठ बुलबुले की भांति है जिसका अस्तित्व क्षणिक है । सच स्थायी है, चिरंतर है । एक सच को छुपाने के लिए सौ झूठ बोलने पड़ते हैं । और अंत में सौ झूठों का आवरण भेद कर

सत्य बाहर निकल ही आता है । सत्य से व्यक्ति जितना मुँह मोड़ता है वह उतना पल-पल सामने आता है । कठिन अवश्य है तप का मार्ग, सत्य का मार्ग, परंतु कल्याणकारी है ।

(क) 'सच' का मार्ग कैसा होता है?

(i) कंटीला और कमजोर (ii) काँटों से भरा एवं सरल

(iii) कंटीला और आसान (iv) काँटों से भरा एवं कठिन

(ख) तप कैसा व्यक्ति कर सकता है?

(i) जिसका दिमाग एकाग्रचित, कुशाग्र एवं निष्पाप हो ।

(ii) जिसका हृदय निष्पाप, एकाग्रचित एवं साफ हो ।

(iii) जिसका हृदय संयमी, सत्यवादी एवं निष्पाप हो ।

(iv) जिसका दिमाग तीव्र, कुशाग्र एवं एकाग्रचित हो ।

(ग) सच बोलने वाले की क्या पहचान हैं?

(i) निडर, साहसी एवं परोपकारी

(ii) निडर, परोपकारी एवं पक्षपात करने वाला

(iii) पक्षपात न करने वाला, साहसी एवं कुशल वक्ता ।

(iv) निडर, सबका प्रिय एवं मुख पर विशेष तेज

(iv) निडर, सबका प्रिय एवं मुख पर विशेष तेज

(घ) मानव जीवन के विकास की राह को आगे बढ़ाते है।

(i) स्वास्थ्य और तप (ii) सत्य और तप

(iii) तप और संयम (iv) संयम और सत्य

(ङ) 'सच' और 'झूठ' में क्या अंतर है?

(i) झूठ एक बार बोलना पड़ता है और सच सौ बार।

(ii) सच बुलबुले की तरह क्षणिक है और झूठ चिरंतर व स्थायी है।

(iii) झूठ बुलबुले की तरह क्षणिक हैं और सच चिरंतर व स्थायी है।

(iv) सच बोलने में खतरा अधिक होने पर झूठ बोलना सत्य ही कहलाता है।